जानें महाभारत में छुपे इस अदभूत रहस्य को



महाभारत और रामायण में कई रहस्य छुपे हुए हैं। युधिष्ठिर के राज में प्रजा को किसी भी चीज की कोई कमी नहीं थी। किंवदंतियों की मान्यता अनुसार कि एक दिन देवऋषि नारद मुनि महाराज युधिष्ठिर के समक्ष प्रकट हुए और कहने लगे कि आप सभी पांडव यहां प्रसन्नतापूर्वक रह रहे हैं, लेकिन वहां स्वर्गलोक में आपके पिता बहुत दुखी हैं। देवऋषि के ऐसे वचन सुनकर युधिष्ठिर ने इसका कारण पूछा, तो देवऋषि ने कहा, 'वे अपने जिंदा रहते हुए राजसूय यज्ञ करवाना चाहते थे लेकिन ऐसा वे कर नहीं सके इसलिए दुखी हैं। महाराज युधिष्ठिर आपको आपके पिता की आत्मा की शांति के लिए यह यज्ञ करवाना चाहिए।' नारदजी के ऐसे वचन सुनकर युधिष्ठिर ने अपने पिता की आत्मा शांति के लिए राजसूय यज्ञ करने की घोषणा की।

महाभारत और रामायण में कई रहस्य छुपे हुए हैं। ऐसा ही एक रहस्य है महाभारत में। यह उस समय की बात है, जब युद्ध में पांडवों ने कौरवों पर विजयश्री प्राप्त कर ली थी और पांडव हस्तिनापुर में सुखपूर्वक जीवन गुजार रहे थे। युधिष्ठिर के राज में प्रजा को किसी भी चीज की कोई कमी नहीं थी। किंवदंतियों की मान्यता अनुसार कि एक दिन देवऋषि नारद मुनि महाराज युधिष्ठिर के समक्ष प्रकट हुए और कहने लगे कि आप सभी पांडव यहां प्रसन्नतापूर्वक रह रहे हैं, लेकिन वहां स्वर्गलोक में आपके पिता बहुत दुखी हैं।

देवऋषि के ऐसे वचन सुनकर युधिष्ठिर ने इसका कारण पूछा, तो देवऋषि ने कहा, 'वे अपने जिंदा रहते हुए राजसूय यज्ञ करवाना चाहते थे लेकिन ऐसा वे कर नहीं सके इसलिए दुखी हैं। महाराज युधिष्ठिर आपको आपके पिता की आत्मा की शांति के लिए यह यज्ञ करवाना चाहिए।' नारदजी के ऐसे वचन सुनकर युधिष्ठिर ने अपने पिता की आत्मा शांति के लिए राजसूय यज्ञ करने की घोषणा की। इसके लिए उन्होंने नारदजी के परामर्श पर भगवान शिव के परम भक्त ऋषि पुरुष मृगा को आमंत्रित करने का फैसला लिया। ऋषि पुरुष मृगा जन्म से आधे पुरुष शरीर के तथा नीचे से उनका पैर मृग का था, लेकिन वे कहां रहते थे यह किसी को पता नहीं था।

किंवदंति अनुसार ऐसे में युधिष्ठिर ने उन्हें ढूंढकर यज्ञ में आमंत्रित करने के लिए भीम को इसकी जिम्मेदारी सौंपी। भीम अपने बडे भ्राता की आज्ञा का पालन करते हुए ऋषि पुरुष मृगा को खोजने निकल पडे। खोजते-खोजते वे घने जंगलों में पहुंच गए। जंगल में चलते वक्त भीम को मार्ग में हनुमानजी दिखाई दिए जिन्होंने भीम के घमंड को चूर किया। यह कथा तो आपको मालूम ही है। भीम भी पवनपुत्र हैं, इस नाते भीम हनुमानजी के भाई हुए। भीम ने लेटे हुए हनुमानजी को बंदर समझकर उनसे अपनी पूंछ हटाने के लिए कहा। तब बंदर ने चुनौती देते हुए कहा कि अगर वह उसकी पूंछ हटा सकता है तो हटा दे, लेकिन भीम उनकी पूंछ हिला भी नहीं पाए। तब जाकर उन्हें एहसास हुआ कि यह कोई साधारण बंदर नहीं है। यह बंदर और कोई नहीं, बल्कि हनुमानजी थे। भीम ने यह जानकर हनुमानजी से क्षमा मांगी। भीम ने हनुमानजी को अपने जंगल में भटकने का उदेश्य बताया। कुछ विचार करने के बाद हनुमानजी ने भीम को अपने शरीर के 3 बाल दिए और कहा कि इन्हें अपने पास रखो संकट के समय में ये तुम्हारे काम आएंगे।

भीम ने हनुमानजी के वे 3 बाल अपने पास सुरक्षित रख लिए और चल पडे ऋषि मृगा को ढूंढने। कुछ दूर जाने के बाद ही भीम को भगवान शिव के परम भक्त पुरुष मृगा मिल गए, जो महादेव शिव की स्तुति कर रहे थे। भीम ने उनके पास जाकर उन्हें प्रणाम किया तथा अपने आने का प्रयोजन बताया। इस पर ऋषि पुरुष मृगा भी उनके साथ चलने को राजी हो गए, लेकिन उन्होंने एक शर्त रख दी। पुरुष मृगा ने यह शर्त रखी कि तुम्हें मुझसे पहले हस्तिनापुर पहुंचना होगा, नहीं तो मैं तुम्हें खा जाऊंगा। भीम ने थोडी देर विचार करने के बाद ऋषि पुरुष मृगा की शर्त स्वीकार कर ली। शर्त स्वीकार करने के बाद वे अपनी पूरी शक्ति के साथ हस्तिनापुर की और दौडने लगे। बहुत दूर तक भागते-भागते भीम ने जब पीछे की ओर यह जानने के लिए देखा कि ऋषि पुरुष मृगा कितने पीछे रह गए हैं तो उन्होंने पाया कि ऋषि तो बस उन्हें पकडने ही वाले हैं। यह देख भीम चौंक गए और घबराकर अपनी पूरी शक्ति के साथ शीघ्रता से भागने लगे। लेकिन हर बार पीछे देखने पर उन्हें ऋषि मृगा उनके बिलकुल पास नजर आते थे।

भागते-भागते तभी भीम को हनुमानजी के दिए उन 3 बालों की याद आ गई। हनुमानजी ने कहा था कि संकट काल में ये तुम्हारे काम आएंगे। भीम ने उनमें से एक बाल दौडते-दौडते जमीन पर फेंक दिया। वह बाल जमीन में गिरते ही लाखों शिवलिंगों में परिवर्तित हो गया। भगवान शिव के परम भक्त होने के कारण ऋषि पुरुष मृगा मार्ग में आए प्रत्येक शिवलिंग को प्रणाम करते हुए आगे बढने लगे। इसके चलते भीम को दूर तक भागने का मौका मिल गया। कुंती पुत्र भीम लगातार भागते रहे। फिर जब भीम को लगा कि ऋषि अब फिर से उन्हें पकड ही लेंगे तो उन्होंने फिर से एक बाल गिरा दिया और वह बाल भी बहुत से शिवलिंगों में परिवर्तित हो गया। इस प्रकार से भीम ने ऐसा 3 बार किया।

अंत में जब भीम हस्तिनापुर के द्वार में घुसने ही वाले थे कि ऋषि पुरुष मृगा उन्हें पकडने के लिए दौडे और उन्हें पकड ही लिया था कि तभी भीम ने छलांग लगाई और उनका बस पैर ही द्वार के बाहर रह गया था। इस पर पुरुष मृगा ने उन्हें पकडते हुए खाना चाहा,लेकिन उसी दौरान भगवान कृष्ण और युधिष्ठिर द्वार पर पहुंच गए। दोनों को देखकर युधिष्ठिर ने भी पुरुष मृगा से बहस करनी शुरू कर दी। तब युधिष्ठिर से पुरुष मृगा ने कहा कि शर्त अनुसार इसका पैर द्वार के बाहर ही था अत: यह पहुंच नहीं पाया। ऐसे में मैं इसे खाऊंगा। फिर भी हे धर्मराज तुम न्याय करने के लिए स्वतंत्र हो। ऐसे वचन सुनकर युधिष्ठिर ने ऋषि पुरुष मृगा से कहा कि भीम के केवल पैर ही द्वार के बाहर रह गए थे, बाकी संपूर्ण शरीर तो द्वार के अंदर ही है अत: आप भीम के केवल पैर ही खा सकते हैं।

ऐसा सुनकर युधिष्ठिर के न्याय से ऋषि पुरुष मृगा प्रसन्न हुए तथा उन्होंने भीम को जीवनदान दे दिया। इसके बाद ऋषि ने यज्ञ संपन्न करवाया और सबको आशीर्वाद भी दिया।

क्यों, माता आद्या शक्ति की पूजा मनोकामना पूर्ण दायक होती है

हिन्दू शास्त्रों के अनुसार, आद्या शक्ति माँ, भगवान् विष्णु के अन्तः कारण की शक्ति हैं, योगमाया शक्ति हैं, तथा प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से संपूर्ण ब्रहमाण्ड के उत्पत्ति के कारक हैं। भगवान ब्रहमा और शिव, की उत्पत्ति भी इन्हीं के अनुसार ही हुई हैं।



सृष्टि के संचालन हेतु, भगवान विष्णु पालनहार, ब्रहमा रचनाकार, तथा शिव संहारक हुए। क्रमश: तीनो महा देव, तीन प्राकृतिक गुणों के कारक बने, सत्व गुण, रजो गुण तथा तमो गुण, संपूर्ण ब्रहमाण्ड का संचालन इन्हीं गुणों के द्वारा ही होता हैं, परन्तु इन कार्यों में इच्छा शक्ति, माता आदि शक्ति की ही होती हैं। इनकी पूजा मनोकामना पूर्ण दायक होती है ।

त्रि-देवो के अनुसार इन की, जीवन संगिनी भी इन कार्यों में संलग्न रहती हैं। त्रि-देवियाँ या महा-देवियाँ, महा लक्ष्मी, महा सरस्वती तथा महा काली के रूप में, त्रि-देवो की जीवन संगिनी तथा सहायक हैं। महा लक्ष्मी के रूप में ये भगवान विष्णु कि सात्विक शक्ति हैं, महा सरस्वती के रूप में ये ब्रहमा जी की राजसिक शक्ति हैं तथा सती अथवा पार्वती के रूप में ये शिव के तामसी शक्ति हैं। काली कुल की देवियाँ प्राय, घोर भयानक स्वरूप तथा उग्र स्वाभाव वाली होती हैं तथा इन का सम्बन्ध काले रंग से होता हैं, इस के विपरीत श्री कुल के देवियाँ सौम्य तथा कोमल स्वाभाव की तथा लाल रंग से सम्बंधित होती हैं। महा कालीश्मशान के भयानक वातावरण में, शिव की छाती पर पैर रख मग्न रहने वाली, भयानक, घोर-रूपा शक्ति ''महा काली'' के नाम से जानी जाती हैं। आदि काल में, जब कुछ भी व्याप्त नहीं था, केवल चारो ओर अंधकार ही अंधकार दृष्टि-गोचर होता था, व्याप्त अंधकार से एक शक्ति उत्पन्न हुई, जिस का नाम काली पडा। अंधकार से जन्मा होने के परिणाम स्वरूप, ये शक्ति तमोगुणी तथा काले वर्ण वाली हैं। वे दिव्य स्वरूप वाली, हजारों चन्द्रमा के किरणों से प्रतिबिंबित कांति वाली प्रतीत होती हैं। इन्हीं की इच्छा शक्ति ने इस संपूर्ण चराचर जगत को उत्पन्न किया हैं तथा सभी को अपने कर्मों का फल प्रदान करने वाली हैं। प्रलय काल मैं ये स्वयं महाकाल का भी भक्षण करने मैं समर्थ हैं। भगवान विष्णु के योग निमग्न रहते हुए, उदित होने वाली तामसी शक्ति, स्वयं आद्या शक्ति हैं जो संहारक हैं तथा महा माया काली के नाम से विख्यात हैं।

यह षडक्षर मंत्र सभी दुख दूर करने वाला मंत्र माना गया है



''ऊँ नम शिवाय'' यह षडक्षर मंत्र सभी दुख दूर करने वाला मंत्र माना गया है। 'ऊँ' भगवान शिव का एकाक्षर मंत्र हैं। 'नम शिवाय' भगवान शिव का पंचाक्षरी मंत्र है। भगवान शिव को आदि देव माना जाता है। हिन्दू मान्यतानुसार भगवान शिव संहार करने वाले माने जाते हैं। जो इस संसार में आता है उसे जाना भी होता है और भगवान शिव इसी कार्य के कर्ता माने जाते हैं। शिव है धर्म की जड। शिव से ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष है।

शिव का रूप : शिव यक्ष के रूप को धारण करते हैं और लंबी-लंबी खूबसूरत जिनकी जटाएँ हैं, जिनके हाथ में 'पिनाक' धनुष है, जो सत् स्वरूप हैं अर्थात् सनातन हैं, यकार स्वरूप दिव्यगुणसम्पन्न उज्जवलस्वरूप होते हुए भी जो दिगम्बर हैं। जो शिव नागराज वासुकि का हार पहिने हुए हैं, वेद जिनकी बारह रुद्रों में गणना करते हैं, पुराण उन्हें शंकर और महेश कहते हैं उन शिव का रूप विचित्र है। अर्धनग्न शरीर पर राख या भभूत मले, जटाधारी, गले में रुद्राक्ष और सर्प लपेटे, तांडव नृत्य करते हैं तथा नंदी जिनके साथ रहता है। उनकी भृकुटि के मध्य में तीसरा नेत्र है। वे सदा शांत और ध्यानमग्न रहते हैं। इनके जन्म का अता-पता नहीं हैं। वे स्वयंभू माने गए हैं।

भगवान शिव का मंत्र

''ऊँ नम शिवाय''यह षडक्षर मंत्र सभी दुख दूर करने वाला मंत्र माना गया है। 'ऊँ' भगवान शिव का एकाक्षर मंत्र हैं। 'नम शिवाय' भगवान शिव का पंचाक्षरी मंत्र है। शिवपुराण के अनुसार भगवान शिव के दो विवाह हुए। दोनों ही बार उनका विवाह भगवती के अवतारों से हुआ। पहला राजा दक्ष की पुत्री सती के साथ और दूसरा हिमालय पुत्री देवी पार्वती के साथ। शिवजी के दो पुत्र माने गए हैं कार्तिकेय और भगवान गणेश। कई जगह शिवांशों यानि शिव के अंशो का वर्णन किया गया जिनमें अंधक नामक शिवांश सबसे प्रमुख हैं।

शिव महिमा : शिव ने कालकूट नामक विष पिया था जो अमृत मंथन के दौरान निकला था। शिव ने भस्मासुर को जो वरदान दिया था उसके जाल में वे खुद ही फँस गए थे। शिव ने कामदेव को भस्म कर दिया था। शिव ने दक्ष के यज्ञ को नष्ट कर दिया था। ब्रहमा द्वारा छल किए जाने पर शिव ने ब्रहमा को शापित कर विष्णु को वरदान दिया था। शिव की महिमा का वर्णन पुराणों में मिलता है।

शिव के प्रमुख नाम : शिव के वैसे तो अनेक नाम हैं जिनमें 108 नामों का उल्लेख पुराणों में मिलता है लेकिन यहाँ प्रचलित नाम जानें- महेश, नीलकंठ, महादेव, महाकाल, शंकर, पशुपतिनाथ, गंगाधर, नटराज, त्रिनेत्र, भोलेनाथ, आदिदेव, आदिनाथ, त्रियंबक, त्रिलोकेश, जटाशंकर, जगदीश, प्रलयंकर, विश्वनाथ, विश्वेश्वर, हर, शिवशंभु, भूतनाथ और रुद्र।

शिवलिंग : विश्व कल्याण के लिए भगवान शिव संसार में शिवलिंग के रूप में विद्यमान हैं। भारत में कई जगह शिवलिंग पाए जाते हैं। भारत में बारह अहम ज्योतिर्लिंग हैं जहां भोलेनाथ शिवलिंग के रूप में विराजमान हैं।

ज्योतिर्लिंग : ज्योतिर्लिंग उत्पत्ति के संबंध में अनेकों मान्यताएँ प्रचलित है। ज्योतिर्लिंग यानी 'व्यापक ब्रहमात्मलिंग' जिसका अर्थ है 'व्यापक प्रकाश'। जो शिवलिंग के बारह खंड हैं। शिवपुराण के अनुसार ब्रहम, माया, जीव, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी को ज्योतिर्लिंग या ज्योति पिंड कहा गया है। भारत में गिरे अनेकों पिंडों में से प्रमुख बारह पिंड को ही ज्योतिर्लिंग में शामिल किया गया।

शिव निवास : तिब्बत स्थित कैलाश पर्वत पर प्रारम्भ में उनका निवास रहा। वैज्ञानिकों के अनुसार तिब्बत धरती की सबसे प्राचीन भूमि है और पुरातनकाल में इसके चारों ओर समुद्र हुआ करता था। फिर जब समुद्र हटा तो अन्य धरती का प्रकटन हुआ। जहाँ पर शिव विराजमान हैं उस पर्वत के ठीक नीचे पाताल लोक है जो भगवान विष्णु का स्थान है। शिव के आसन के ऊपर वायुमंडल के पार क्रमश: स्वर्ग लोक और फिर ब्रहमाजी का स्थान है। ऐसा पुराण कहते हैं। काशी मान्यतानुसार भगवान शिव का निवास कैलाश पर्वत पर है। लेकिन उनकी प्रिय नगरी है काशी। पुराणों के अनुसार काशी के कण-कण में शिव विराजमान हैं।

शिव की प्रिय वस्तुएं : रुद्राक्ष : भगवान शिव के आभूषणों में रुद्राक्ष का अहम महत्व है। मान्यता है कि त्रिपुरासुर नामक राक्षस के वध के बाद भगवान शिव के नेत्रों से गिरे अश्रु बिन्दुओं से वृक्ष उत्पन्न हुए और रुद्राक्ष के नाम से प्रसिद्ध हुए।

भस्म : भगवान भोलेनाथ भस्मी में रमते हैं। मान्यता है कि शिवजी की पूजा भस्म के बिना पूर्ण नहीं होती।

बेलपत्र : भगवान शंकर का एक नाम भोलेनाथ भी है क्योंकि वह बहुत जल्दी किसी की भी मनोकामना पूर्ण कर देते हैं। उनकी पूजा में छत्तीस भोग नहीं लगते वह तो मात्र भांग, धतूरे और बेलपत्र के चढावे से प्रसन्न हो जाते हैं।

अपार कृपा चाहिए तो कीजिए अपरा एकादशी व्रत

शास्त्रों में कहा गया है कि कार्तिक मास में स्नान करने या गंगा तट पर पितरों का पिंडदान करने से जो फल प्राप्त होता है वैसा ही फल अपरा एकादशी का व्रत करने से प्राप्त होता है। इस दिन भगवान विष्णु के पांचवे अवतार वामन की पूजा कर उनकी कृपा प्राप्त की जाती है।



एकादशी व्रत सिर्फ मोक्ष और मुक्ति की कामना से ही नहीं किया जाता है बल्कि इस व्रत के प्रताप से धन-धान्य और समृद्धि में भी बढोतरी होती है। ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी ही अपरा या अचला एकादशी कही जाती है। भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त करके जीवन में सभी तरह के कष्टों से मुक्ति पाई जा सकती है। चूंकि यह अपार भगवत कृपा दिलाने वाली एकादशी है इसलिए इसे अपरा एकादशी के नाम से जाना जाता है। यह एकादशी भवसागर से पार उतारने वाली है। पद्मपुराण में वर्णन है कि इस एकादशी का प्रभाव व्यक्ति को तमाम तरह के आर्थिक संकटों से मुक्ति दिलाता है और उसे मुश्किलों से उबारता है। यह भी मान्यता है कि इस एकादशी पर व्रत के प्रताप से ऐसे बुरे कर्मों का भी शमन होता है जिनके परिणामस्वरूप व्यक्ति को प्रेत योनि में जाना पड सकता है। शास्त्रों में कहा गया है परनिंदा, छल, दूसरों से ठगी और झूठ बोलना ये ऐसी बुराइयां हैं जिनसे व्यक्ति का परलोक बिगडता है और भूलवश भी अगर ये गलतियां मनुष्य से हो जाएं तो आत्मा का मैल धोने के लिए ही एकादशी व्रत श्रेष्ठ है।

यह व्रत आत्मा को निर्मल और स्वच्छ करता है और दूसरों के प्रति अधिक भलाई से पेश आने की सीख देता है। इस व्रत से मिलने वाला सौभाग्य तीर्थ यात्रा, पिंडदान, सुवर्ण दान आदि से बढकर है। विधि-विधान से यह व्रत करने वाला कष्टों से मुक्ति पाकर विष्णु धाम का भागी होता है।

पुराणों में कहा गया है कि एकादशी के दिन प्रात:काल मन को विकारों से मुक्त करें। स्नानादि से निवृत्त होकर भगवान विष्णु की पूजा करें। उन्हें तुलसीदल, फल, चंदन अर्पित करें। पूरे दिन मन को संयमित रखें और झूठ और कपटपूर्ण व्यवहार भूलवश भी न होने पाए। जो श्रद्धालु किसी कारण व्रत नहीं रखते हैं उन्हें एकादशी के दिन चावल का प्रयोग भोजन में नहीं करना चाहिए। इस दिन विष्णु सहानाम का पाठ करने से भगवान की कृपा पाई जा सकती है। 'ऊं नमो भगवते वासुदेवाय इस द्वादश मंत्र का जाप करें। राम, कृष्ण, नारायण आदि विष्णु के सहस्त्रनाम जपें। इस दिन भगवान विष्णु का स्मरण कर प्रार्थना करें कि - 'हे त्रिलोकीनाथ! मेरी लाज आपके हाथ है, अत: मुझे इस व्रत प्रण को पूरा करने की शक्ति प्रदान करना।

एकादशी व्रत करने की इच्छा रखने वाले मनुष्य को दशमी के दिन से कुछ नियमों का पालन करना चाहिए। इस दिन प्याज, मसूर की दाल सहित कुछेक वस्तुओं को त्याज देना चाहिए। ब्रहमचर्य का पालन करना चाहिए तथा भोग-विलास से दूर रहना चाहिए। एकादशी के दिन प्रात: लकडी का दातुन न करें, नीबू, जामुन या आम के पत्ते लेकर चबा लें और अंगुली से कंठ साफ कर लें। वृक्ष से पत्ता तोडना भी इस दिन निषेध है।

अत: गिरे हुए पत्ते लेकर उनका उपयोग करें। इस दिन जाने-अनजाने किसी का दिल दुखाने के लिए बार-बार क्षमा मांगना चाहिए। एकादशी का अर्थ तन और मन दोनों की शुद्धि है। मन में दूसरों के प्रति किसी भी तरह का बैर भाव न रहे यही एकादशी का सच्चा अर्थ है। इस दिन अपने मनोविकारों पर नियंत्रण का पूर्ण प्रयास करना चाहिए। एकादशी के दिन यथाशक्ति दान करना चाहिए या किसी भूखे व्यक्ति को भोजन कराना चाहिए। इस दिन किंतु किसी का दिया हुआ अन्ना कदापि ग्रहण न करें। इस दिन जो भी वस्तु ग्रहण करें उसका पहले प्रभु को भोग लगाएं। द्वादशी के दिन ब्राहमणों को मिष्ठान्ना और दक्षिणा देना चाहिए। इस दिन अपनी वाणी को सयंमित रखने का पूरा प्रयास करना चाहिए।

व्रत की महत्ता : ग्रंथों में अचला एकादशी व्रत के साथ एक कथा आती है कि महिध्वज नामक एक धर्मात्मा राजा था। उसका छोटा भाई बज्रध्वज बहुत ही क्रूर, अधर्मी तथा अन्यायी था। वह बडे भाई से बहुत द्वेष रखता था तथा स्वभाव से भी अवसरवादी था। एक रात उसने अपने बडे भाई की हत्या कर दी और उसकी देह को पीपल के नीचे दबा दिया। मृत्यु उपरांत वह पीपल के वृक्ष पर उत्पात मचाने लगा। लोग उससे बहुत परेशान हो गए। एक दिन अकस्मात धौम्य ऋषि का उधर से गुजरना हुआ। जब उन्हें इस बात का बोध हुआ तो उन्होंने अपने तपोबल से पेड पर रहने वाली उस आत्मा को नीचे उतारा और उसे उपदेश दिया। उसे इस योनि से छुटकारे के लिए अपरा एकादशी व्रत का मार्ग सुझाया। इस प्रकार इस व्रत के प्रभाव से उसकी मुक्ति संभव हुई। धर्मग्रंथों की ये प्रतीकात्मक कथाएं हमें बताती हैं कि अगर हम ईश्वर का भजन करते हैं और उसकी शरण पाते हैं तो हम जीवन की भुलभूलैया से निकल पाते हैं और हमें सही रास्ता मिल जाता है।